संकल्प अर्थात?

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

संकल्प अर्थात ?

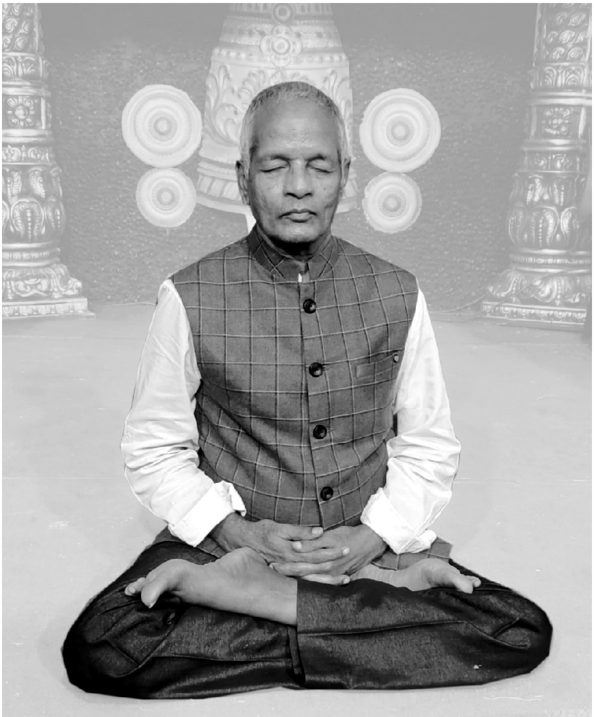

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति तम्मन श्रीलता

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.40/-

विषय सूची

1. ध्यान के द्वारा शक्ति 3
2. ''ध्यान करने से शक्ति कैसे बढ़ती है ?'' 7
3. अर्जित किया गया शक्ति वैसे ही रहेगा क्या ? 11
4. इच्छा – संकल्प 14
5. संकल्प अर्थात ? 27
6. विकल्प अर्थात ? 27
7. विरुद्ध संकल्प 28
8. संकल्प शुद्धि 29
9. संकल्प शक्ति! 29

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

ध्यान के द्वारा शक्ति

ध्यान क्यों ? ऐसा कई लोग सोचते हैं। लेकिन ध्यान करने से किसी को भी शक्ति मिलती है। यानी उनमें शक्ति बढ़ती है। शक्ति बढ़ते बढ़ते कोई भी कुछ भी हासिल कर सकता है।

इसीलिए पूर्व काल में मुनि, ऋषि, राक्षस भी ध्यान करते थे। वे अपार शक्ति प्राप्त करते थे, अलौकिक शक्तियाँ भी प्राप्त करते थे। सामान्यों के लिए जो असंभव है उनको भी हासिल करते थे।

हम वर्तमान में जो ध्यान करते हैं, उसे प्राचीन काल में ''तपस्या'' कहा जाता था। इसका कारण यह है कि वे सभी किसी न किसी तपन के साथ इस ध्यान को विशेष रूप से करते थे। वैसे ही ''तप के साथ, तपना से किया गया ध्यान ही तपस्या है।'' 'तपना ही तपस्या है।' एक तरह से स्त्रतपस्या करनास्त्र अर्थात 'ध्यान करना' ही है। एक तरह से प्राचीन काल में ऋषि जो तपस्या करते थे, वर्तमान में हम आज जो ध्यान करते हैं – ये दोनों एक ही हैं।

ध्यान करना यानी ध्यान लगाना। किस पर ? उस पर जिसे वह खुद चाहता है, जिसे वह खुद पसंद करता है। वर्तमान में हम ध्यान के द्वारा किस पर ध्यान लगा रहे हैं ? 'आत्मा' पर। 'आत्मा' कौन है ? स्वयं भगवान। इस सृष्टि को सृष्टि करने वाला है। सृष्टि कारक है, सृष्टि को चलाने वाला है। सृष्टि का आधार है। ऐसे भगवान पर ध्यान केंद्रित करना, दृष्टि रखना ही 'श्वास पर ध्यान' रखकर ध्यान करना, जो हम कर रहे हैं।

वैसे तपस्या करते हुए यानी ध्यान करते हुए कोई भी आत्मा अर्थात भगवान के करीब आता है। जैसे–जैसे भगवान के करीब आता है, वैसे–वैसे किसी में भी 'शक्ति' बढ़ती है। 'शक्ति' को आंखों से देख नहीं सकते। 'शक्ति' शरीर को पुष्टि नहीं देती। शरीर पुष्टि से है तो उसे 'बल' कहा जाता है। इसलिए देवताओं, भगवानों, योगियों और ऋषियों को 'शक्तिशाली' कहा जाता है, लेकिन 'बलवान' नहीं कहते।

रामकृष्ण परमहंस शक्तिशाली हैं, रमण महर्षि शक्तिशाली हैं, शिरडी बाबा शक्तिशाली हैं, वीरब्रह्मेन्द्रस्वामी शक्तिशाली हैं, वे बलवान नहीं हैं। इनके पास मांसपेशियाँ नहीं थे। इन्हें शक्ति ध्यान करने से ही आई। जितना अधिक ध्यान किया जाए, उतनी ही अधिक शक्ति आती है।

जिसके पास शक्ति है वह कुछ भी कर सकता है, कुछ भी हासिल कर सकता है। शक्तिहीन कुछ भी नहीं कर सकता, कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। शक्तिहीन सभी से डरता है, सब पर संदेह करता है। जिसके पास शक्ति है निडर रहता है, चाहे कुछ भी हो संकोच नहीं करता।

शक्तिहीन विनती करता है, प्रार्थना करता है, गुहारता है, बचाओ, रक्षा करो कहता है, चीख कर भगवान को पुकारता है, दीनता से हीनता से व्यवहार करता है। लेकिन शक्तिशाली विनती नहीं करता – आशीर्वाद देता है, प्रार्थना नहीं करता है – पालन करता है, रक्षा करो नहीं कहता – सबकी रक्षा करता है, बचाओ नहीं कहता वह सबको बचाता है। चीख कर भगवान को नहीं पुकारता – आधिक्यता का प्रदर्शन करता है। वह कायर की तरह व्यवहार नहीं करता – साहसी के जैसे व्यवहार करता है। हीनता से व्यवहार नहीं करता – अभिनेता की तरह व्यवहार करता है। यह सब शक्ति होने के कारण ही संभव है।

ध्यान करके शक्ति अर्जित करने वाले, जैसे–जैसे उनकी शक्ति बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे वे सब कुछ कर पाते हैं, शक्ति के अनुरूप ही व्यवहार करते हैं। जैसे–जैसे शक्ति बढ़ती है, जो लिख नहीं सकते वे लिखने लगते हैं, जो चारों के सामने बोल नहीं सकते वे बोलने लगते हैं, जो काम कर नहीं सकते वे काम करने लगते हैं। शक्ति बढ़ते ही उन से किए गए कामों में कौशल बढ़ती है, बल्कि प्रदर्शित भी करते हैं।

शक्तिहीन लोग दुःख, कठिनाइयाँ और समस्याएँ सहन नहीं कर पाते। लेकिन जिनके पास शक्ति होती है, वे चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आने पर भी अटल रहते हैं, चाहे कितना भी दुःख हो, वे ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो।

शक्ति न होने वाले लोग हर विषय में प्रतिस्पंदन करते हैं। लेकिन जिनके पास शक्ति होती है, वे शीतोष्णों में, सुख-दु:खों में, मान-अपमान में, हार-जीत में सम स्थिति का प्रदर्शन करते हैं। वे अरे बाबरे-बाब नहीं कहते।

शक्ति न होने वालों में त्रिकरण शुद्धि नहीं होती। शक्ति होने वालों में त्रिकरण शुद्धि होती है।

शक्ति न होने वाले जो कुछ उनके पास है, जो कुछ उनके साथ हो रहा है, सब कुछ स्थायी मानते हैं। वे अत्यधिक ममता को प्रदर्शित करते हैं। लेकिन शक्तिशाली जानते हैं कि कुछ भी स्थायी नहीं है। वे जानते हैं कि सब कुछ बदलने वाला है! बदलेंगे भी! परिवर्तन भी स्वाभाविक है।

जिनके पास शक्ति नहीं होती, वे अज्ञान में रहते हैं। जैसे-जैसे शक्ति बढ़ती है, वे ज्ञानी बनते जाते हैं। जिनके पास शक्ति होती है, वे सम्मान, अपमान दोनों को मधुरता से स्वीकार करते हैं। जिनके पास शक्ति नहीं होती, वे सम्मान मिलने पर फूल जाते हैं। अपमान मिलने पर टूट जाते हैं।

जिनके पास शक्ति नहीं होती वे कुछ खोने पर दु:खी होते हैं, कुछ मिलने पर आनंदित होते हैं। लेकिन जिनके पास शक्ति होती है, वे मिलने से, खोने से एक ही तरह रहते हैं। जिनके पास शक्ति नहीं होती, वे दु:खी रहते हैं, अशांति से जीवन जीते हैं। लेकिन जिनके पास शक्ति होती है, वे आनंद से, शांति से जीवन जीते हैं।

जिनके पास शक्ति नहीं होती, उन्हें प्रज्ञा नहीं होती, लेकिन जिनके पास शक्ति होती है, उन्हें प्रज्ञा होती है। जैसे-जैसे शक्ति बढ़ती है, ऊर्ध्व लोकों की प्राप्ति होती है।

हम जो देवताओं की आराधना करते हैं, वे सभी शक्तिशाली ही हैं। उन सभी ने ध्यान ही किया है! वैसे ही कोई भी जैसे-जैसे ध्यान करते-करते शक्तिशाली बनकर, विवेकानंद जी की तरह, रामण महर्षि की तरह, सत्य साईबाबा की तरह, बुद्ध की तरह, यीशु की तरह शक्तिशाली बनते हैं।

इसलिए शक्ति को बढ़ाइए। आनंद से जीवन जीइए। आप में शक्ति है क्या? शक्ति बढ़ी है क्या? यह जानने के लिए आपको अपने जीवन जीने

के तरीके को गौर से देखना होगा, तभी आपको स्वयं पता चलेगा। वैसे ही, जैसे-जैसे आप ध्यान करते हैं, आपके अंदर शक्ति बढ़ती रहती है। आपके अंदर जो परिवर्तन आते हैं, उन्हें आप स्वयं देख सकते हैं। जितना अधिक ध्यान साधना करेंगे, उतने ही शक्तिशाली बनेंगे। अधिक करेंगे तो अधिक शक्ति, कम करेंगे तो कम शक्ति। इसलिए कहा गया है कि ''जिसने जितना किया उसे उतना ही मिलता है।''

वैसे ही आपके जीवन में कितने दिनों तक ध्यान करोगे उतने दिन आपकी शक्ति बढ़ती रहेगी। इसलिए जितना संभव हो सके, उतना अधिक ध्यान कीजिए।

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

"ध्यान करने से शक्ति कैसे बढ़ती है ?"

ध्यान करते समय सबसे पहले हम अपने हाथों को बांधते हैं, पैरों को बाँधते हैं, आँखें बंद कर लेते हैं। तब स्वाभाविकता से हमारे मन में विचार आने लगते हैं। यानी मन तरह- तरह विचारों की ओर भागता है। तुरंत हम अपने मन को फिर से श्वास पर ले आते हैं। कुछ देर बाद मन फिर से विचारों पर जाता है। फिर से मन को श्वास पर रखते हैं। ऐसा करते-करते धीरे-धीरे विचार कम होते जाते हैं... कम होते जाते हैं... और एक स्थिति में... एक स्तर में...सारे विचार रुक जाते हैं। मन में कोई भी विषय नहीं होते हैं। यानी मन में कोई विषय नहीं होते अर्थात कोई विचार नहीं होते यानी मन शून्य हो जाता है।

इस स्थिति में वहाँ केवल अनंत शक्तिशाली 'आत्मा' ही होती है। जो कोई जितनी देर तक उस स्थिति में रहता है... वे उतनी देर तक आत्मस्थिति में होता है। ऐसे लोगों को स्वाभाविकता से भीतर जो अनंत आत्मशक्ति थोड़ा प्राप्त होता है। साथ ही, उन्हें ब्रह्मांड में व्याप्त विश्वशक्ति भी थोड़ा प्राप्त होता है। इन शक्तियों के वजह से वे शक्तिशाली बनते हैं। जितनी देर वे ध्यान की स्थिति में रहते हैं यानी विचारशून्य स्थिति में उतनी ही शक्ति प्राप्त करते हुए उतने ही अधिक शक्तिशाली बनते जाते हैं।

जैसे-जैसे शक्ति बढ़ती है, वैसे-वैसे वे जीवन में कई लाभ प्राप्त करते हैं। उन में से कुछ के बारे में हम ऊपर जान चुके हैं। यही कारण है कि अनेक योगी उस प्रकार की ध्यान स्थिति में घंटों, दिनों, महीनों, वर्षों तक वैसे ही रहकर अपार शक्ति अर्जित कर चुके हैं, दिव्य शक्तियाँ प्राप्त कर चुके हैं, दिव्यता को प्राप्त किया है। ऐसे महान आत्माओं को हम आज के युग में भी

हमे मत खाइए। प्यार करिए ॥

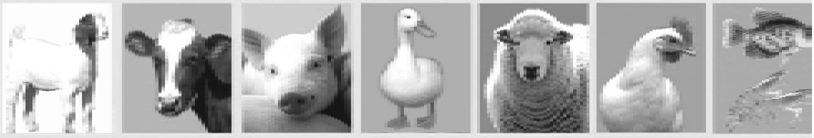

भगवान के लिए सभी प्राणी मूल्यवान हैं।

देख सकते हैं, अतीत में भी वे थे। रमण महर्षि, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, श्री वीरब्राह्मेन्द्र स्वामी, योगी वेमना, राघवेंद्र स्वामी, सत्य साईं बाबा, शिरडी साईं बाबा, पाकालपाटी गुरुजी, मुम्मिडिवरम बालयोगी, सुभाष पत्री जी के जैसे अनेक महान साधक हैं। कुछ को हम जानते हैं, और बहुत से ऐसे भी हैं जिन्हें हम नहीं जानते। सभी ने ध्यान ही किया है। उन्होंने जो किया वह ध्यान ही था। उन्होंने जो बताया है, वह भी ध्यान ही था।

हम उन सभी को शक्तिशाली कहते हैं, लेकिन बलवान नहीं कहते। कारण यह है कि उनके पास शारीरिक बल नहीं होता। यानी उनकी मांसपेशियाँ नहीं होती। क्योंकि उन्होंने भोजन को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने मांस, अंडे, मछली, मुर्गा, बकरी, सूअर नहीं खाया। शरीर को नहीं बढ़ाया, बल्कि शक्ति को बढ़ाया। इसी के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया – वे ज्ञानी बने। मेधा को विकसित किया – मेधावी बने। धर्म को जाना – धर्ममूर्ति बने। प्रेम को बढ़ाया – प्रेममूर्ति बने। करुणा को बढ़ाया – करुणा के स्वरूप बने। दया को बढ़ाया – दयालु बने। दिव्य शक्तियाँ प्राप्त किया – दिव्य बने। यानी देवता बन गए। केवल मनुष्यों से ही नहीं, बल्कि सभी जीवों से – मुर्गी, बकरी, मछली जैसे प्राणियों से भी प्रेम किया, रक्षा किया, करुणा, दया दिखाया। सबसे स्नेह करते हैं। यह बताया कि सब एक हैं, सब समान हैं। इस सत्य को जान सके कि ''सब मैं ही हूँ – मैं ही सब हूँ।''

इसलिए जानिए कि बल से शक्ति महान है। बलशाली नहीं, शक्तिशाली बनिए, क्योंकि बलशालियों को दुःख नहीं मिटता – लेकिन शक्तिशालियों का दुःख मिटता है। बलशालियों में संकल्पशक्ति नहीं होती, इच्छाएँ होती हैं – शक्तिशालियों में अपार संकल्पशक्ति होती है, इच्छाएँ उनके नियंत्रण में रहती हैं। इतना ही नहीं, अगर गौर से देखें तो सामान्य लोग बलशालियों के चरणों पर नहीं गिरते, वे शक्तिशालियों के चरणों पर गिरते हैं। इसलिए, बलशाली बनना मुख्य नहीं है – शक्ति प्राप्त करके शक्तिशाली जैसे, योगी जैसे बनना ही मुख्य है।

इतना ही नहीं बल्कि ध्यान के द्वारा – अर्थात मन को शून्य करने के द्वारा ही शक्ति प्राप्त की जा सकती है, आत्मस्थिति प्राप्त की जा सकती है, ज्ञानी बन सकते हैं यह बात भगवान श्रीकृष्ण ने भी बहुत पहले भगवद्गीता के माध्यम से बताया है।

श्लोकः धूमे नाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ।। (भ.गी.3-38)

ताः धुएँ से अग्नि, मैल से दर्पण, बीजाण्डासन से गर्भाशय में स्थित भ्रूण ढका रहता है उसी प्रकार कामना के द्वारा आत्मज्ञान ढका होता है।

ऊपर दिए गए संदेश के अनुसार कामना अर्थात इच्छा। अर्थात मन जो आत्मज्ञान को यानी आत्मा को ढककर रखता है। इसका मतलब यह है कि अनंत शक्ति से युक्त आत्मा को मलिन मन ढककर रखने के कारण, उसे आवृत करने के कारण, मानव शक्तिहीनता से, अज्ञानता से भरा हुआ व्यवहार कर रहा है।

जिस तरह धुएँ से अग्नि, मैल से दर्पण, बीजाण्डासन से गर्भाशय में स्थित भ्रूण ढका रहता है उसी प्रकार मन से आत्मा ढका हुआ है।

इसलिए जैसे धुआँ हट जाने पर अग्नि प्रकाशित होती है, जैसे मैल हट जाने पर दर्पण में प्रतिबिंब स्पष्टता से दिखाई देता है, जैसे बीजाण्डासन हटाने पर गर्भस्थ शिशु बाहर आता है उसी प्रकार यदि मन न हो अर्थात शून्य हो जाए अर्थात विचार रुक जाएँ तो मानव में आत्मशक्ति बाहर आता है अर्थात प्रकट होकर आत्मज्ञान बढ़ेगा यही श्रीकृष्ण ने उपरोक्त श्लोक के माध्यम से

बताया है।

इसलिए यह जानना चाहिए कि जो लोग ध्यान करते हैं, मन को शून्य करते हैं, उनमें अपार शक्ति बढ़ती है। जिनमें यह शक्ति बढ़ती है, उनके लिए धरती पर असंभव जैसा कुछ नहीं होता। वे कुछ भी सहजता से प्राप्त कर लेते हैं।

इसलिए जान लीजिए कि शक्तिशाली कोई प्रार्थना नहीं करते। वे किसी से कुछ नहीं माँगते। न भगवान से, न प्रकृति से, न ब्रह्मांड से कि यह चाहिए, यह होना चाहिए, वे नहीं चाहते कि जो वे चाहते हैं वह घटित हो। यानी वे संकल्प नहीं रखते। वे जो चाहते हैं, उसे पाने के लिए प्रयास करते हैं। इसलिए कोई भी हो, उसे शक्ति बढ़ाकर शक्तिशाली बनने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। शक्तिहीनों के जैसे व्यवहार नहीं करना चाहिए। ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे शक्ति नष्ट हो।

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

अर्जित किया गया शक्ति वैसे ही रहेगा क्या ?

ध्यान करने से शक्ति बढ़ती है यह जानकर आजकल बहुत से लोग ध्यान कर रहे हैं। इस तरह ध्यान करते हुए कई लोग अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं। कुछ लोग तो बहुत अधिक ध्यान कर रहे हैं। सिर्फ अवसर मिलने पर ही नहीं, बल्कि अवसर बनाकर भी ध्यान कर रहे हैं। ऐसे पूर्णिमा की रातों में, अमावस्या की रातों में भी ध्यान करते हैं। 40 दिनों की दीक्षाएं, अखंड ध्यान भी कर रहे हैं।

ऐसे करते हुए बहुत से लोग भावना कर रहे हैं कि उनकी शक्ति बहुत बढ़ गई है। कुछ लोग कहते हैं कि जब वे ध्यान करते हैं, तब उन्हें लगता है कि अपार शक्ति उनके भीतर प्रवेश कर रही है। और कुछ लोग कहते हैं कि वे उस शक्ति को सहन नहीं कर पा रहे हैं, ध्यान में टिककर बैठ नहीं पा रहे हैं। इस तरह अधिक ध्यान करने से वे मानते हैं कि हमने बहुत शक्ति अर्जित कर ली है।

लेकिन यहाँ गौर से देंखें तो बहुत लोगों में, चाहे कितने भी साल ध्यान किया हो, चाहे जितना अधिक ध्यान किया हो, चाहे कितनी भी शक्ति अर्जित किया हो-उनमें कोई बदलाव नहीं होता। उनके व्यवहार में कोई बदलाव नजर नहीं आता, बस हल्का-फुल्का अंतर दिखता है। कुछ लोग तो ध्यान करने वालों को देखकर उनकी आलोचना भी करते हैं। वे कहते हैं, कई सालों से ध्यान कर रहे हो ? तुम में क्या बदलाव आया ? तुम क्या बदले हो ! इसी तरह, जो मास्टर्स कई सालों से ध्यान करते हैं, उनके व्यवहार भी सही नहीं होता। देखने वाले सोचते हैं- ''ये इतने वर्षों से ध्यान कर रहे हैं, फिर भी इनका व्यवहार ऐसा क्यों है ?'' ऐसा सोचते भी हैं, कहते भी हैं।

वैसे ही गौर से देंखें तो बहुत से लोगों में ध्यान करने के बाद भी वो बदलाव नहीं आते जो आना चाहिए। इसका मुख्य कारण यह नहीं है कि उन्हें ध्यान से शक्ति प्राप्त नहीं हो रही है। शक्ति तो प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन कुछ गलतियाँ करने की वजह से, कुछ चूकना की वजह से वे उस अर्जित शक्ति को खो रहे हैं। क्योंकि ध्यान साधना से बिना किसी संदेह के शक्ति बढ़ती है।

लेकिन उनकी गलतियों के कारण न केवल वे अर्जित शक्ति को खो बैठते हैं। बल्कि वे फिर से पहले की सामान्य स्थिति में लौट आते हैं। पहले जैसे सामान्य व्यवहार ही करते हैं।

उदाहरण के लिए ऊपर के टैंक में हम मोटर से पानी भर रहे हैं। लेकिन अगर टैंक के नीचे मौजूद छेदों को हम नज़रअंदाज़ कर दें, तो क्या होगा? जो भी पानी भरा जा रहा है, वह सब बाहर निकल जाएगा, है ना? चाहे जितना भी पानी भरें, चाहे कितनी भी समय तक भरते रहें, टैंक कभी नहीं भरता हैं ना। जो भी मेहनत किया गया है, वह सब मेहनत व्यर्थ हो जाता हैं ना। इसका मुख्य कारण यही है कि टैंक के नीचे मौजूद छेदों को नहीं देख पाना। अगर उन छेदों को बंद करके फिर पानी भरा जाए... तो देखिए टैंक कितनी जल्दी भर जाता है? इससे ये स्पष्ट होता है कि "सिर्फ पानी भरना ही ज़रूरी नहीं है, टैंक के नीचे छेद न होना भी उतना ही ज़रूरी है।" यानी दृष्टि केवल पानी भरने पर ही नहीं, नीचे के छेदों पर भी होना चाहिए।

उसी प्रकार, बहुत से लोग मेहनत से ध्यान साधना करके शक्ति अर्जित कर रहे हैं, लेकिन उनमें मौजूद कुछ दोषों और गलतियों के कारण उन से अर्जित की गई शक्ति को पूरी तरह से खो रहे हैं। इसलिए "शक्ति को अर्जित करना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि अर्जित की गई शक्ति को खोने से बचाना ही असली महत्वता है।" अर्थात "हमने कितना साधना किया? कितना शक्ति अर्जित किया?" यह महत्व नहीं है, बल्कि "क्या हम उस अर्जित शक्ति को संभाल पा रहे हैं या नहीं?" यही महत्वता है। इसका मतलब "सिर्फ साधना करना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि गलतियाँ न करना भी महत्वपूर्ण है।" यानी ध्यान साधना ऐसी होनी चाहिए जिसमें कोई दोष, कोई गलती न हो। क्योंकि थोड़ी सी भी ध्यान साधना से भी हम अनेक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हम में बहुत परिवर्तन आ सकता है। इसलिए यह देखना चाहिए कि त्रुटियाँ न हो।

देखिए, जो भी कमाया है सब खर्च कर दिया, तो लाखों कमाने का भी क्या फायदा? अब तो कुछ भी नहीं है ना?... लेकिन अगर हज़ार रुपये कमाए और उन्हें खर्च नहीं किया, तो कम से कम वे हज़ार तो दिखाई देंगे।

धीरे–धीरे वही हज़ार लाख भी बन सकते हैं। इसका मतलब यह है कि "यहाँ कमाना मुख्य बात नहीं है, बल्कि खर्च होने से बचाना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।" उसी तरह, "ध्यान के माध्यम से शक्ति अर्जित करना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि अर्जित की गई शक्ति को खर्च न होने देना ज़्यादा महत्वपूर्ण है"। यानी गलतियाँ न करना ही ज़्यादा महत्वपूर्ण है। अर्थात त्रुटियों के बिना साधना करना ही महत्वपूर्ण है।

तो किन–किन विषयों में साधक नुकसान हो रहे हैं ? वे अपनी शक्ति को कैसे खो रहे हैं ? जो शक्ति उन्होंने साधना से अर्जित की है, उसे वे कैसे खो रहे हैं ? क्यों वे कितनी साधना करने पर भी आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं ? हमेशा वैसे ही रहते हैं ? वैसे ही व्यवहार करते हैं। वे महान क्यों नहीं बन पा रहे हैं ? क्यों उनमें कोई परिवर्तन नहीं आ रहा ? गलती कहाँ हो रही है ? इन विषयों के बारे में थोड़ा जानेंगे।

मुख्यत: आहार के नियमों का पालन न करना एक कारण है। इसी वजह से साधक अपनी शक्ति को खो रहे हैं, शक्ति को बढ़ा नहीं पा रहे हैं। इसलिए ध्यान साधकों को आहार के नियमों का पालन करना चाहिए। केवल सात्विक शाकाहार भोजन ही लेना चाहिए। मांसाहार, अंडे नहीं खाने चाहिए। इतना ही नहीं, शक्ति को खोने का एक और कारण भी है। बहुत से लोग संकल्प ध्यान कर रहे हैं। यानी संकल्प रखकर ध्यान कर रहे हैं। इसी वजह से भी कई लोग अपनी अर्जित शक्ति को खो रहे हैं।

क्योंकि बहुत से लोगों को यह भी नहीं पता कि संकल्प क्या होता है। उन्हें संकल्प और इच्छा में क्या अंतर है, यह भी नहीं पता। विकल्प क्या होता है, यह भी नहीं पता। संकल्प शुद्धि क्या होती है ? संकल्प शक्ति कैसे बढ़ती है ? यह सब उन्हें नहीं पता। संकल्प शक्ति को बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए, यह भी नहीं पता। इन सभी को जाने बिना, सोचे बिना, जो कोई कुछ भी कहे, जैसे कहे वैसे ही कर देते हैं। इससे वे नुकसान प्राप्त कर रहे हैं, यह भी जान नहीं पा रहे हैं। इसलिए पहले इन विषयों के बारे में सोचना चाहिए, जानना चाहिए। खासकर सबसे पहले यह जानना चाहिए कि इच्छा क्या है ? संकल्प क्या है ?

इच्छा - संकल्प

खासकर ये सोचिए। जब कोई मंदिर या प्रार्थना मंदिर जाता है, तो वे अपनी इच्छाओं को ईश्वर से मन में कहते हैं। यानी जो उन्हें चाहिए, उसे अपने मन में कहते हैं। ऐसे मन में जो कहा गया उसे इच्छा कहा जाता है।

वैसे ही अब संकल्प रखने वाले भी मन में कहते हैं कि उनके कष्ट दूर हों, बीमारियाँ ठीक हो जाएँ, समस्याएँ दूर हों, जो उन्होंने सोचा वो पूरा हो जाए। देखा जाए तो वहाँ भी... यहाँ भी... दोनों मन में ही कहा जा रहा है! तो फिर इन दोनों में फर्क क्या है ? यह मुख्यत: सोचना चाहिए! जानना चाहिए! इसलिए जानेंगे कि इच्छा में, संकल्प में क्या अंतर है।

जो मन में कहते हैं वो इच्छाएँ हैं। स्वाभाविक रूप से हर एक को समस्याएँ, कष्ट होते हैं। एक तरह से देखा जाए तो ऐसा कोई नहीं है जिसे कोई समस्या न हो। इतना ही नहीं समस्याएँ पीड़ादायक भी होते हैं। उस पीड़ा को सहन न कर पाने के कारण कोई भी उस पीड़ा से बाहर निकलना चाहते हैं। आसानी से, जल्दी से बाहर निकालने की कोशिश करते हैं। इसलिए अपने प्रिय देवता से मन में प्रार्थना करते हैं कि उनके कष्ट दूर हों, उनकी इच्छाएँ पूरी हों। वही देवता सब कुछ देंगे, सब पूरा करेंगे, इस आशा के साथ वे प्रतीक्षा करते रहते हैं। अगर इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं तो कहते हैं कि ईश्वर की कृपा है। यदि पूरा नहीं होते तो कहते हैं कि यह मेरा कर्म है। गौर से देंखें तो यहाँ किसी भी तरह का प्रयास दिखाई नहीं देता। ऐसे प्रयास रहित को ही ''इच्छा'' कहते हैं।

जान लीजिए ''जो सोचा है वह पूरा हो जाए'' बस ऐसा सोचकर बैठे रहना ही इच्छा कहते हैं। लेकिन जो सोचा है उसे पाने के लिए विशेष रूप से प्रयास करना संकल्प कहते हैं।

अर्थात ''इच्छा रखने वाला बस बैठा रहता है। संकल्प करने वाला प्रयास करता है।''

गौर से देखें तो इन दोनों में अंतर केवल प्रयास ही है ! क्योंकि दोनों को मन में ही कहते हैं। लेकिन इच्छा में प्रयास नहीं होता। संकल्प में प्रयास होता है। इसलिए संकल्प करने वाला प्रयास करता है। इसीलिए "यदि प्रयास न हो तो उसे इच्छा कहते हैं। यदि प्रयास हो तो उसे संकल्प कहते हैं।"

एक तरह से "चाहना इच्छा है, करना संकल्प है"। दोनों ही सोचने की हैं। लेकिन यहाँ फर्क यह है कि "जो इच्छा करता है वो बैठा रहता है, जो संकल्प करता है वो प्रयास करता है"। उदाहरण के लिए देखें जब हम किसी मंदिर या प्रार्थना मंदिर को जाते हैं, तो वहाँ अपनी इच्छाओं को मन में कहते हैं। हमेशा इस उम्मीद में रहते हैं कि कब उनकी इच्छा पूरी होगी। लेकिन जो संकल्प करते हैं, वे उसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करना शुरू कर देते हैं। जो भी संकल्प करते हैं, उसी के अनुसार मेहनत करते हैं। जिस तरह का संकल्प करते हैं, उस तरह का ही प्रयास करते हैं।

उदाहरण के लिए पत्रीजी को ही लीजिए। उन्होंने 20-30 साल पहले ही यह संकल्प किया था कि 2012 तक पूरी दुनिया को ध्यान के बारे में बताना चाहते थे। यानी उन्होंने संकल्प किया। क्या उन्होंने संकल्प करके घर में ध्यान करते हुए बैठ गए ? नहीं ना ? उन्होंने जो संकल्प किया, उसे पूरा करने के लिए उसी क्षण से विशेष प्रयास शुरू कर दिए। गौर से देखें तो उन्होंने साधारण प्रयास नहीं किया। उन्होंने दिन-रात, बिना रुके परिश्रम किया। उन्होंने इतना अधिक किया, जितना कोई और शायद कर ही न पाए। उन्होंने पूरी दुनिया में तूफान की तरह यात्रा की। इसी को संकल्प कहते हैं। उनका संकल्प अत्यंत महान था। उनमें अपार 'संकल्प शक्ति' थी। इसीलिए वे उतना परिश्रम कर पाए। जो असंभव था, उसे संभव बना पाए।

लेकिन यदि बिना प्रयास किए केवल बैठकर ध्यान करें, तो वह संकल्प नहीं होता, इच्छा होता है। यानी सभी संकल्प करके ध्यान नहीं कर रहे हैं। केवल इच्छा करके ध्यान कर रहे हैं। याद रखिए 'जो करने का संकल्प करता है, वह बैठता नहीं, प्रयास करता है। जो इच्छा करता है, वह प्रयास नहीं करता, बस बैठा रहता है।'

इतना ही नहीं, जो भी करना है, उसके लिए संबंधित प्रयास भी करना पड़ता है। यानी जिस चीज़ का संकल्प करते हैं, उसी के लिए मेहनत करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपने इडली–सांभर खाने का संकल्प किया है, तो आप पहले दाल भिगोते हैं, फिर उसका छिलका हटाते हैं, मिक्सर में पीसते हैं, रवा मिलाते हैं, फिर कुकर में पकाते हैं। उसी तरह सांभर भी तैयार करते हैं। उसके बाद आराम से बैठकर खाते हैं। लेकिन अगर आप इडली–सांभर खाने की सोचकर कुछ भी न करें और बस बैठे रहें, तो वो खाने का इच्छा होता है, संकल्प नहीं होता। इतना ही नहीं, अगर आप इडली–सांभर खाने का संकल्प लेकर भी कोई प्रयास न करें और बस बैठकर ध्यान करें। तो क्या आप खा पाएंगे? क्या कभी खा पाओगे? कभी नहीं। आपका संकल्प कभी पूरा नहीं होगा।

जान लीजिए कि इस सृष्टि में जो कोई भी प्रयास करेगा तो कुछ भी हासिल कर सकता है। परिश्रम करने पर ही कोई भी परिणाम मिलता है। इसलिए कहा जाता है "कृषि से नास्ति दुर्भिक्षम"। इतना ही नहीं "कष्टे फली" भी कहा जाता है। यानी जो मेहनत करता है, उसे ही परिणाम मिलता है।

इसलिए कोई भी सोचकर ध्यान करते हुए प्रयास किए बिना बैठेगा तो उसे संकल्प नहीं कहते, इच्छा कहते हैं। वे इच्छा को ही संकल्प मानकर बुला रहे हैं। और एक बार जान लीजिए "जो संकल्प करते हैं, वे प्रयास करते हैं। जो जैसा संकल्प करते हैं, वैसा ही प्रयास करते हैं। कोई संकल्प ही नहीं करेगा तो कोई प्रयास नहीं करेंगे। वैसे ही एक संकल्प करके दूसरा प्रयास नहीं करेगा।"

उदाहरण के लिए इडली सांभर खाने का संकल्प करके... पूरी–सब्ज़ी नहीं बनायेंगे, क्योंकि इडली–सांभर का ही संकल्प किया है। उसी तरह पुस्तक पढ़ने का संकल्प करके टी.वी. नहीं देखेंगे...पुस्तक ही पढ़ेंगे। वैसे ही जो पुस्तक को पढ़ने का संकल्प करते हैं उसी पुस्तक को पढ़ेंगे। वैसे ही नए कपड़े सिलवाने का संकल्प करेंगे तो कपड़े ही सिलवायेंगे। सोने की

चूड़ियाँ बनवाने का संकल्प करेंगे तो सोने की चूड़ियाँ ही बनवायेंगे। अगर घर में फर्नीचर बनवाने का संकल्प करेंगे तो फर्नीचर ही बनवायेंगे। कुछ भी संकल्प नहीं करेंगे तो कुछ भी नहीं करेंगे।

एक तरह से आप उन्हीं का संकल्प करते हैं जिन्हें आप कर सकते हैं। जिन्हें आप नहीं कर सकते, उनका संकल्प नहीं करते। अगर कभी कर भी लिया, तो वो अधूरी इच्छा बनकर ही रह जाती है। तब आप बीच बीच में अपने नज़दीकी लोगों से कहते रहते हैं... ''कार ख़रीदने की इच्छा है, एक मंज़िला मकान बनवाने की इच्छा है, रत्नों का हार बनवाने की इच्छा है, अमेरिका जाने की इच्छा है अब तक पूरी नहीं हुई... आप कहते रहते हैं कि ऐसी अधूरी इच्छाएँ बहुत सारी हैं। लेकिन आप कभी नहीं कहते कि'' मेरे संकल्प रह गए हैं।

लेकिन वर्तमान में कुछ लोग कहते हैं ''तुम को जो चाहिए वो कहकर यानी मन में संकल्प रखकर ध्यान करो, तुम्हारी समस्या दूर हो जाएगी, तुम्हारे बीमारियां ठीक हो जाएँगे, जो तुम चाहो वो हो जाएगा।''ऐसा सुनते ही स्वाभाविकता से किसी को भी आशा पैदा होती है, बहुत आसान लगता है। बहुत अच्छा भी लगता है! क्योंकि वे समस्याओं से बाहर आना चाहते हैं न? इसलिए ज़्यादा कुछ नहीं सोचते, वैसे ही करते रहते हैं। लेकिन यहाँ ज़रूर सोचना चाहिए। पहले ये जनना ज़रूरी है कि 'इच्छा' क्या है? 'संकल्प' क्या है?

क्योंकि बहुत लोगों को बहुत अधूरी इच्छाएँ होती हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोगों की यह इच्छा होती है कि उनका बेटा कलेक्टर बने। लेकिन वह नहीं बन पाया। अब उसकी उम्र की सीमा (एज बार) पार हो चुकी है। क्या वह अब कलेक्टर बन सकता है? यानी नहीं बन सकता, है ना? अगर वह अब कलेक्टर बनने का संकल्प रखकर ध्यान करने से क्या एज बार होने पर भी तुम्हारा बेटा कलेक्टर बन सकता है? कभी नहीं बन सकता। चाहे जितने भी लोगों से संकल्प रखवाकर ध्यान करवाया जाए, वह नहीं बनेगा। इसलिए वो आपकी इच्छा होती है, लेकिन संकल्प नहीं। अगर बचपन से ही

आपका बेटा कलेक्टर बनने का संकल्प रखकर, उसी के अनुसार मेहनत करके, प्रयास करेगा, तो शायद बन सकता था, या नहीं भी बन सकता था यह उसकी मेहनत पर निर्भर होता है। लेकिन कम से कम डिग्री पास किए बिना, मेहनत किए बिना अगर ध्यान करेगा तो आपका बेटा कलेक्टर कैसे बनेगा?

इसी तरह, बहुत से लोग बचपन से ही अपने पसंदीदा मार्ग को चुनकर उसे हासिल करने का संकल्प करके विशेषता से प्रयास करते हैं। अंततः वे अपने लक्ष्य को हासिल करते हैं। वैसे ही अच्छा डांसर बनना चाहेगा तो वह बचपन से ही डांस की अभ्यास करता है, और किसी पर दृष्टि नहीं रखते, अंत में वह एक अच्छा डांसर बनता है। इसी तरह, अगर गायक बनने का संकल्प करते हैं तो संगीत सीखता है, विशेषता से अभ्यास करता है, अच्छा गायक बनता है। उसी तरह क्रिकेटर बनने का संकल्प करता है तो बचपन से ही क्रिकेट का अभ्यास करता है। अंत में चैंपियन बनता है।

वैसे जो क्रिकेट चैंपियन बनने का संकल्प करता है, वह डांस का अभ्यास नहीं करता। उसी तरह जो डांस का अभ्यास करता है, वह कभी भी क्रिकेट चैंपियन नहीं बन सकता। वैसे जो सोचा है उसे हासिल करना उनकी संकल्प शक्ति पर निर्भर होता है। अगर उनका संकल्प मजबूत हो, तो उनका प्रयास भी उतनी ही तीव्र होगी। इसीलिए उनका संकल्प मजबूत है? या नहीं? यह हम उन से किए गए प्रयास से जान सकते हैं। अगर उनका प्रयास सही ढंग से नहीं हो, तो हम समझ सकते हैं कि उनका संकल्प भी उतना मजबूत नहीं है।

इसलिए जान लीजिए "अगर दृढ संकल्प रखोगे... तो प्रयास तीव्रता से नहीं करते। उसका संकल्प बल हो तो प्रयास तीव्र होगा"। "हम समझ सकते हैं कि प्रयास तीव्रता से हो तो यानी उसका संकल्प मजबूत से है।" यह कोई कहने से संकल्प रखना नहीं, कोई दृढता से सोचना भी नहीं। यह स्वाभाविक रूप से आना चाहिए। कोई कहने से नहीं आता। अगर उनके भीतर बलपूर्वक होता है, तो फिर उसे कोई बताने की ज़रूरत के बगैर ही प्रयास करता है, हासिल भी करता है। अगर उनमें नहीं हो तो चाहे जितना भी

कोई कहले कि मज़बूत संकल्प बना लो, वैसे ही चाहे जितना भी ध्यान करे कोई लाभ नहीं होता।

एक बार फिर जान लीजिए–''जो संकल्प करता है, वह प्रयास करता है। जो सिर्फ इच्छा करता है, वह बैठा रहता है।'' इसी तरह, यह भी जान लेना चाहिए कि संकल्प के बल पर ही प्रयास भी निर्भर होता है। यह भी जान लेना चाहिए कि जैसा संकल्प होता है, वैसी ही प्रयास भी होता है। अब यहाँ कुछ संदेहों का निवारण करेंगे।

कुछ लोग पूछ सकते हैं कि हमने संकल्प करके ध्यान किया, तो जो हमने सोचा था उनमें से कुछ अपेक्षित पूरी हुईं, कुछ हुवे भी। फिर वे कैसे हुवे ? ऐसे संदेह वे व्यक्त कर सकते हैं।

लेकिन गौर से देखें तो बहुत से लोग ऐसे ही सोचकर ध्यान में बैठते हैं। स्वाभाविकता से कुछ लोगों के संकल्प पूरे होते हैं, जो उन्होंने सोचा है वे पूरे हुवे। लेकिन सभी को नहीं होते, सभी को अपेक्षित परिणाम नहीं आते। तो फिर इसका कारण क्या है ?

अगर संकल्प रखकर ध्यान करेंगे तो सबको होना चाहिए ना ? फिर क्यों नहीं हुआ ? कुछ लोगों को ही क्यों हुआ ? तब जिनके संकल्प पूरे हुए उनसे मास्टर कहता है कि देखा, मैंने कहा था ना ? हो गया। जिनको नहीं हुआ, उनसे मास्टर कहता है कि तुमने ''संकल्प मज़बूती से नहीं किया– मज़बूती से संकल्प करो !'' ऐसा कहते हैं। अगर कोई कहे कि हमने तो पूरी मज़बूती से संकल्प किया, फिर भी जो सोचा था वो नहीं हुआ तब मास्टर कहते हैं कि आपकी ऊर्जा का स्तर पर्याप्त नहीं है। इसीलिए नहीं हुआ। इसलिए और ज़्यादा ध्यान करो, ऊर्जा बढ़ाओ... तब जो तुमने सोचा था वो होगा। लेकिन यहाँ सोचने की जरूरत है। ऐसे सोचा और बैठकर ध्यान करने को संकल्प नहीं कहते... इच्छा कहते हैं। यानी इच्छा करके ध्यान करते हैं। यानी इच्छा करके ध्यान करने से कुछ लोगों को परिणाम मिला, कुछ लोगों को नहीं मिला। इसका कारण जानना चाहिए।

जान लीजिए कि दृढ़ संकल्प का मतलब दृढ़ता से सोचना नहीं है।

बल्कि विकल्प रहित होना चाहिए। यानी ''विकल्प रहित संकल्प ही दृढ़ संकल्प है।'' ऐसा संकल्प से ही सिद्ध हो सकता है। इसलिए अगर किसी का संकल्प पूरा होना है! यानी सफल होना है! तो जानना है कि विकल्प नहीं होना चाहिए। इसलिए विकल्प क्या है ? विकल्प-रहित संकल्प कैसे संभव है ? इसे बाद में जानेंगे।

तो ऐसे ही सोचकर ध्यान में बैठते ही कुछ लोगों को क्यों हो जाता है ? जबकि कुछ लोगों को क्यों नहीं होता ? सिर्फ इतना ही नहीं जिन लोगों को एक बार हुआ, उन्हें और एक बार नहीं होता। आख़िर इसके पीछे कारण क्या है ? यह हमें मुख्यता से जानना चाहिए।

मुख्यत: ध्यान करते रहने से हर एक में शक्ति बढ़ती रहती है। जब विशेषता से ध्यान करते हैं, तो विशेषता से शक्ति बढ़ती है। ऐसे ही, जो विशेष ध्यान करके विशेषता से शक्ति हासिल करते हैं, वे जो भी इच्छा करेंगे, वो इच्छा पूरी होगी। इसका कारण यह है कि उन्हें जो इच्छा चाहा उसे पूर्ण करने लायक शक्ति उन में होती है। उसी तरह अगर उनके पास इच्छा को पूरा करने लायक शक्ति नहीं हो तो उनकी इच्छा पूरी नहीं होती।

यहीं पर एक विषय को जानना चाहिए। जिसके पास शक्ति होती है, उसकी इच्छा पूरी होती है। लेकिन उस समय तक उन्होंने ध्यान के द्वारा जो शक्ति अर्जित किया गया सारी शक्ति खो देते हैं। वे फिर साधना में सामान्य स्थिति तक पहुँच जाते हैं। यानी इच्छा पूरी तो होती है, लेकिन शक्ति खो देते हैं। ऐसे लोग फिर से और एक संकल्प करते हैं, यानी चाहेंगे, तो वो संकल्प पूरा नहीं होता। कारण यह है कि उन्होंने अपनी शक्ति खो दिया है। इसी कारण से एक संकल्प सफल हुआ, और एक संकल्प असफल हुआ। उसी तरह कितना ध्यान करने पर भी संकल्प यानी इच्छाएं पूरे न होने का कारण उनमें पर्याप्त शक्ति न होना।

ऐसी परिस्थितियों में कुछ लोग पूछ सकते हैं कि अगर हम संकल्प नहीं करेंगे, तो हमारी समस्याएँ कैसे दूर होंगी ? हमारी पीड़ाएँ कैसे दूर होंगे ? लेकिन जान लीजिए इच्छा किए बिना यानी बिना संकल्प किए ध्यान करने पर

भी... उनके इच्छा के अनुसार पर्याप्त ध्यान करके, शक्ति अर्जित करेंगे तो बस उनकी इच्छा स्वाभाविकता से ही पूरा होती है। लेकिन यहाँ एक और लाभ है उनकी शक्ति खर्च नहीं होती। इसलिए बिना इच्छा के ध्यान करना ही किसी के लिए भी उत्तम है। कारण यह है कि समस्या का हल भी हो जायेगा, शक्ति भी खर्च नहीं होगी। इसीलिए ''तुम प्रयास करो। परिणाम प्रकृति पर छोड़ दो।'' क्योंकि ''कर्म करने का अधिकार हमें है लेकिन, हम से किए गए कामों का परिणाम चाहने का अधिकार हमें नहीं है''।

इसलिए जान लीजिए भगवान की सृष्टि में इच्छा किए बिना साधना करने वाले दो प्रकार से लाभ प्राप्त करते हैं। लेकिन जो इच्छा करते हैं वे दो प्रकार से नुकसान होते हैं। क्योंकि वे अपनी शक्ति को खोते ही नहीं, बल्कि एक समस्या हल हो भी जाए, तो फिर से समस्याएँ आती ही रहती हैं। तब वे कुछ भी कर नहीं पाते। यहाँ तक कि उन समस्याओं को सहने की शक्ति भी उनके पास नहीं रहती। इसका कारण यही है कि उन्होंने अपनी शक्ति खो दिया है। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है ''प्रयास करिए, लेकिन इच्छा नहीं करिए।''

यही बात भगवद्गीता में स्पष्टता से कहा गया। इसलिए ही शास्त्रों में कहा गया है ''जो जितना प्रयास करता है, उतना परिणाम पाता है।'' लेकिन ऐसा नहीं कहा गया कि ''जो जितना इच्छा करता है, उतना पाता है।''

मुख्यत: भगवान श्रीकृष्ण ने ''निष्काम कर्म करने को कहा'', यानी ''जो भी कर्म करो, कोई भी काम करो, उसके फल की आशा मत करो, अर्थात इच्छा मत करो।''

उन्होंने और भी कहा ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन!'' अर्थात ''तुम्हें कर्म करने का अधिकार है, लेकिन परिणाम की आशा करने का अधिकार नहीं है।'' यानी इच्छा करने का अधिकार ही नहीं है ऐसा कहा गया है।

उन्होंने और क्या कहा यानी ''कर्तृत्व भाव के बिना कर्म करो''। अर्थात ''मैं कर रहा हूँ'' ऐसा भाव भी छोड़ दो, ऐसा उन्होंने कहा। तो जब

''मैं'' का भाव ही नहीं है, तो फिर इच्छा करना कहाँ से हो सकता है ?

इतना ही नहीं, उन्होंने और भी कहा ''कर्मफल का त्याग ही सबसे महान है''। अर्थात जो भी कर्म हम करते हैं, उसके परिणामों की आशा नहीं करनी चाहिए, उसे छोड़ देना चाहिए। यही सबसे महान है, ऐसा उन्होंने बताया। इसका मतलब यह है कि ध्यान करने पर भी, उसके परिणामों की आशा नहीं करनी चाहिए। लेकिन हम ध्यान करने से पहले ही संकल्प कर लेते हैं, यानी इच्छा कर रहे हैं, यानी आशा कर रहे हैं, यानी हम वही कर रहे हैं जो भगवान ने मना किया है। जब ऐसा करते हैं तो नुकसान तो हमारा ही होगा ना ? इसलिए यह जानना चाहिए कि जो ध्यान साधना हमें शक्तिशाली बनाता है, उसे करते समय संकल्प करने की अर्थात इच्छा करने की आवश्यकता नहीं है।

भगवत गीता में से नीचे दिए गए श्लोक को देखिए।

श्लोकः यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंड़ितं बुधाः ।। (भ.गी.4-19)

ताः जिन के समस्त कर्म बिना इच्छा, बिना संकल्प के प्रारंभ होते हैं, जिसके सारे कर्म ज्ञान की अग्नि में भस्म हो जाते हैं ! उन को ज्ञानीजन पंडित कहते हैं।

उपरोक्त श्लोक के आधार पर जब कोई भी कर्मों को करते वक्त बिना इच्छा के, बिना संकल्प के करना चाहिए, ऐसा करने वालों को भगवान श्री कृष्ण ने महान कहा है। इससे हम जान सकते हैं कि जब हम ध्यान करते हैं, तब भी हमें बिना किसी इच्छा के, बिना किसी संकल्प के करना चाहिए।

क्योंकि इस सृष्टि में ''जो करना चाहिए वो यदि किया जाए, तो जो पाना है वो अवश्य प्राप्त होगा।'' जान लीजिए ''जिसने किया है, वह यदि इच्छा न भी करे, जो मिलना है वो उसे मिलता है। वैसे ही जिसने नहीं किया, वह इच्छा करने पर भी प्राप्त नहीं होता।'' यही इस सृष्टि का एक महान सिद्धांत है। इसलिए जान लीजिए ! जो इच्छा करके यानी संकल्प रखकर ध्यान करने वाले नुकसान होते हैं। लेकिन जो लोग बिना इच्छा के, बिना किसी

संकल्प के ध्यान करने वाले हर प्रकार से लाभ पाते हैं।

इच्छा करके ध्यान करने से अर्जित की गई शक्ति कैसे खो देते हैं उसे ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की कथा के द्वारा जानेंगे।

विश्वामित्र ने 1000 वर्षों का तप किया अर्थात ध्यान किया। उन्होंने अपार शक्ति अर्जित किया। इतनी शक्ति अर्जित किया कि वे सृष्टि के जैसे सृष्टि कर सकते थे। इतनी अपार शक्ति अर्जित करने वाले विश्वामित्र को देखकर इंद्र डर गए। उन्होंने सोचा कि इतनी शक्ति प्राप्त करने वाला विश्वामित्र क्या लोक कल्याण करेगा? लोक का नाश करेगा क्या? इस संदेह से इंद्र ने उन्हें परीक्षा करने का निर्णय लिया।

इंद्र ने मेनका को भेजा। मेनका के सौंदर्य को देखकर विश्वामित्र मोहित हो गए। विश्वामित्र ने मेनका से अपनी इच्छा को प्रकट किया कि मुझसे विवाह करो। तब मेनका ने एक शर्त रखा। क्या शर्त? उसने कहा कि जिस दिन तुम मेरी इच्छा को इनकार करोगे... उसी दिन मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी। इस शर्त को विश्वामित्र ने स्वीकार किया। दोनों ने विवाह किया। दोनों मिलकर गृहस्थ जीवन बिताने लगे। लेकिन मेनका अजीब इच्छाओं को माँगने लगी। मेनका ऐसे समय में चमेली के फूल माँगती जब चमेली का मौसम नहीं होता। आम के फल तब माँगती जब आम का मौसम नहीं होता। मेनका की बात को मना न कर सकने वाले विश्वामित्र, उसकी इच्छाएँ पूरी करने के लिए अपनी तपस्या से अर्जित की हुई शक्ति को थोड़ा-थोड़ा खर्च करके चमेली के फूल, आम के फलों को सृष्टि किया। कभी-कभी मेनका कहती थी कि मैं तुम्हारे साथ आकाश में विहार करना चाहती हूँ। तब विश्वामित्र ने अपनी और शक्ति को खर्च करके उसकी इच्छा पूरी करते। इस तरह मेनका विचित्र-विचित्र इच्छाएँ व्यक्त करती रहती थी। अपनी बात निभाने के लिए विश्वामित्र अपनी अर्जित शक्ति को लगातार खर्च करते हुए उसकी हर इच्छा को पूरा करते थे।

ऐसे ही समय में एक दिन मेनका ने कहा कि चलो एक बार फिर से आकाश में विहार करेंगे। तब विश्वामित्र ने ठीक है कहकर हाथों को ऊपर

उठा कर... चलो ऊपर चलते हैं। लेकिन इस बार ऊपर उठ नहीं पाए। कितना कोशिश करने पर भी ऊपर उड़ नहीं सके। तभी विश्वामित्र को समझ में आया। उन्होंने जान लिया कि तपस्या अर्थात ध्यान के द्वारा जो शक्ति अर्जित किया सारी शक्ति खर्च हो चुकी थी। तब उन्होंने मेनका से कहा मेरी सारी शक्ति खर्च हो गई। अब मैं ऊपर नहीं उड़ पा रहा हूँ। तब मेनका ने जो शर्त रखा उसे याद दिलाकर उसने विश्वामित्र को छोड़कर स्वर्ग को लौट गई। तब विश्वामित्र को बहुत पीड़ा हुई। मैंने 1000 वर्ष मेहनत कर के जो तपस्या अर्थात ध्यान करके जो शक्ति अर्जित किया सब खर्च हो गई! इच्छा के कारण यानी मेनका की इच्छाओं को पूरा करने के लिए मैंने कितनी शक्ति खो दी! इस से पीड़ित होकर उन्होंने फिर से तपस्या प्रारंभ किया। और एक बार उन्होंने 1000 वर्षों तक तपस्या किया। फिर से उन्होंने अपार शक्ति को अर्जित किया।

इस बार इंद्र ने रंभा को भेजा। रंभा को देखते ही विश्वामित्र को अपार क्रोध आया। इंद्र मुझे बुद्धिहीन समझ रहा है। अब मैं उसे सबक सिखाऊँगा। इस क्रोध में उन्होंने रंभा को शिला बन जाने का शाप दिया। लेकिन ऐसा शाप देने के कारण उन्होंने फिर से अपनी अर्जित शक्ति को खो दिया। वे फिर से एक साधारण मनुष्य बन गए। फिर उन्हें बहुत पीड़ा हुई। उनके पास करने को कुछ नहीं बचा, इसलिए उन्होंने फिर से दृढ़ निश्चय के साथ तपस्या करके फिर से शक्ति अर्जित किया। इस प्रकार उन्होंने चार बार शक्ति अर्जित करके उस शक्ति को खो भी दिया। अंतत: उन्होंने अंतिम बार तपस्या करके अपार शक्ति प्राप्त करके सभी परीक्षाओं को पार करके ब्रह्मर्षि बन गए, बहुत महान बन गए।

अगर हम विश्वामित्र के जीवन को गौर से देखें तो उन्होंने तपस्या यानी ध्यान के द्वारा जो शक्ति अर्जित किया उस शक्ति को उन्होंने इच्छाओं को पूरा करने के लिए खर्च करके फिर से साधना किया। इसलिए हमें जानना चाहिए कि कोई भी अगर ध्यान के द्वारा अर्जित शक्ति को इच्छाओं के लिए उपयोग करता है यानी संकल्प रखने पर शक्ति खो देता है। इसलिए जानना चाहिए कि जो लोग संकल्प रखकर ध्यान करके जो शक्ति अर्जित किया गया

वो शक्ति खो देते हैं। अर्थात वे फिर से शुरुआत की स्थिति में आ जाते हैं। अर्थात चाहे वे कितने भी वर्षों तक ध्यान करें! चाहे वे कितनी तीव्रता से ध्यान करने पर भी फिर से सामान्य स्थिति में होते हैं। वे सामान्यों की तरह जीवन जीते हैं। वे ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे उनके पास कोई शक्ति ही नहीं है।

इसलिए हमें जानना चाहिए कि शक्ति को खोना नहीं चाहिए। इतना ही नहीं जैसे-जैसे शक्ति बढ़ते ही जीवन में आने वाले लाभों को जानना चाहिए। कड़ी मेहनत से जो ध्यान साधना करके जो शक्ति अर्जित किया उसे छोटी-छोटी इच्छाओं के लिए शक्ति को व्यर्थ नहीं करना चाहिए, उसे नष्ट नहीं करना चाहिए। ध्यान शक्ति के महत्व, महानता को जानना चाहिए। शक्ति को बढ़ाना चाहिए। क्योंकि सांसारिक जीवन में मनुष्यों को अनेक समस्याएँ होती हैं। यदि कोई एक समस्या को शक्ति खर्च करके हल कर भी लिया तो फिर और एक समस्या आती है। मनुष्य के जीवन में समस्याओं का कोई अंत नहीं है। इसलिए शक्ति को खोए बिना समस्याओं को हल करना चाहिए। अर्थात संकल्प के बिना ध्यान करना चाहिए। तब समस्याएँ अपने आप हल हो जाएँगी... शक्ति भी नहीं खोएंगे।

इसलिए ध्यान करिए। परिणाम प्रकृति पर छोड़ दो। तब सब कुछ लाभदायक ही होगा।

इतना ही नहीं असल में यह जानिए कि कष्ट क्यों आ रहे हैं। कष्ट आने का कारण हमारे द्वारा किए गए पाप कर्म हैं यानी जीवों की हिंसा, अधर्म व्यवहार। इसलिए जीव हिंसा मत कीजिए अर्थात मांस मत खाईए, धर्म क्या है, इसे जानकर धर्म के अनुसार जीवन जीइए। तब जीवन में समस्याएँ ही नहीं आएँगी। आनंदमय जीवन जी सकेंगे। विशेषता से ध्यान कीजिए। उस मोक्ष को प्राप्त करेंगे जिसमें जीवन ही नहीं होता।

कुछ लोग पूछते रहते हैं। तो फिर मुझे किस तरह के संकल्प करना चाहिए? ऐसे लोगों को मास्टर्स सलाह देते हैं कि सत संकल्प करना चाहिए। अर्थात लोक कल्याणकारी संकल्प ही करना चाहिए। यदि ऐसे संकल्प किए जाएँ तो वे पूरा होते हैं, ऐसा कुछ लोग कहते हैं... और कुछ मास्टर्स यह

सलाह भी देते हैं कि ऐसे संकल्प करने से आपकी शक्ति भी बढ़ेगी। इन बातों के बारे में भी जानेंगे।

याद रखिए लोक कल्याणकारी संकल्प यानी सत्संकल्पों को रखेंग तो जो सोचा वो नहीं होगा। आपकी शक्ति नहीं बढ़ेगी। यहां होता क्या है कि जिनके पास अच्छे संकल्प होते हैं, वे लोककल्याण के कार्य, अच्छे काम करते हैं, अर्थात वे जो प्रयास करते हैं लोकहित में होता है। जिससे सबको लाभ होता है। ऐसे प्रयासों को स्वाभाविकता से प्रकृति का सहयोग मिलता है। अर्थात वे जो प्रयास कर रहे हैं, उसमें अप्रत्याशित सहयोग मिलता है। अंत में वे जो चाहते हैं आसानी से हासिल करते हैं। तब कहते हैं कि उनका संकल्प पूरा हुआ, यानी उनका संकल्प सिद्ध हो गया।

इसलिए एक बार फिर से याद रखिए, आप अच्छे कामों का संकल्प करके प्रयास आरंभ करें तो वो चाहे कितना भी महान कार्य क्यों न हो, उसे हासिल कर सकते हैं। उसे कर सकते हैं।

लेकिन मैंने एक अच्छा संकल्प किया है और बैठकर ध्यान करते हुए प्रयास ही न करें तो कुछ भी हासिल नहीं करोगे। इतना ही नहीं उनके संकल्प में कोई विकल्प हो, या वो संकल्प शुद्ध न हो, तो वह सत्संकल्प होने पर भी सिद्ध नहीं होता, पूरा नहीं होता।

इतना ही नहीं तुम ने एक अच्छा संकल्प रखने पर भी, तुम शक्तिशाली नहीं बनोगे, तुम्हारी शक्ति नहीं बढ़ेगी। ध्यान करने से ही किसी की भी शक्ति बढ़ती है।

इसलिए पहले इन विषयों को जानना चाहिए कि संकल्प क्या है ? विकल्प क्या है ? संकल्प शुद्धता क्या है ? संकल्पशक्ति क्या है ? संकल्प सिद्धि कैसे प्राप्त होती है ? इन सभी विषयों को ब्रह्मर्षि पत्रीजी ने बहुत विस्तार से ''संकल्पशक्ति'' नामक पुस्तक में बताया है। उस पुस्तक को अच्छी तरह अध्ययन कीजिए।

संकल्प अर्थात ?

संकल्प के बारे में और भी विस्तार से जानेंगे। संकल्प अर्थात जो सोचा है उसे हासिल करने के लिए कोशिश करना यानी प्रयास करना। अर्थात जो संकल्प करते हैं, वे जो कुछ भी संकल्प कर के उसे हासिल करने के लिए यानी उसे सिद्ध करने के लिए प्रयास करते हैं।

उदाहरण के लिए मंगळमपल्ली बालमुरलीकृष्ण ने बचपन में ही संगीत विद्वान बनने का संकल्प किया था। संगीत साधना में विशेषता से प्रयास किया। संगीत में महान विद्वान बन गए। उन्होंने संगीत विद्वान बनने का संकल्प करके घर में बैठकर संगीत साधना छोड़कर ध्यान नहीं किया। वैसे ही सचिन तेंडुलकर ने क्रिकेट चैंपियन बनने का संकल्प किया। क्रिकेट में बचपन से ही विशेष अभ्यास किया। यानी प्रयास किया, क्रिकेट में चैंपियन बन गए। लेकिन उन्होंने अभ्यास किए बिना चैंपियन बनने का संकल्प रखकर, घर में बैठकर ध्यान नहीं किया।

इसलिए संकल्प करके अर्थात इच्छा करके ध्यान करने से जो चाहा है वह पूरा नहीं होता। ध्यान जो है तुम्हारे संकल्प शक्ति को बढ़ाता है, अर्थात संकल्पशक्ति को बढ़ाना हो तो ध्यान बहुत आवश्यक है। वैसे ही जिनके पास संकल्पशक्ति होती है, वे ही विशेष प्रयास करते हैं। विशेष प्रयास करने वाले ने जो सोचा उसे हासिल करते हैं।

विकल्प अर्थात ?

जब हम कोई काम करने का सोचते हैं, तब तुरंत दो तरह के विचार आते हैं। अरे...! मैं क्या कर पाऊँगा! मुझ से होगा क्या? यह मेरे लिए संभव है क्या? मैं क्या कर सकता हूँ? शायद मुझसे न हो पाएगा? इस तरह के विचार आते हैं। उस तरह के विचारों को ''विकल्प'' कहा जाता है।

मेरे से होगा। ''मैं करूँगा'' इस तरह के विचारों को ही ''संकल्प'' कहते हैं। अरे मुझ से हो पाएगा क्या? वे मैंने जो कहा सुनेंगे क्या? मेरा किस्मत जैसा होगा वैसा ही होगा! मानव एक सोचेगा तो भगवान कुछ और

तय करता है ना? उस तरह के विचारों को ''विकल्प'' कहा जाता है।

एक तरह से 'संकल्प' का अर्थ है पॉजिटिव थॉट! यानी सकारात्मक विचार... मैं करूँगा, मैं हासिल करूँगा, मैं कर सकता हूँ, ज़रूर मेरे से होगा। मैं जा सकता हूँ, मैं बोल सकता हूँ, मैं चढ़ सकता हूँ इस तरह के विचार।

वैसे ही विकल्प का अर्थ है नेगेटिव थॉट! यानी ''नकारात्मक विचार'' जैसे कि ''मुझ से नहीं होगा'' ऐसे विचार।

विरुद्ध संकल्प

अगर हम परस्पर विरूद्ध संकल्प करेंगे तो कुछ भी हासिल नहीं कर पाएँगे। अर्थात संकल्प पूरा नहीं होगा। मैं क्रिकेट चैंपियन बनना चाहता हूँ। मैं फ़िल्मों में हीरो भी बनना चाहता हूँ। ये दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध संकल्प हैं। ये दोनों एक साथ कैसे संभव होंगे? अगर हम क्रिकेट चैंपियन बनना चाहते हैं तो फ़िल्मों में हीरो बनने की सोच को भूलना पड़ेगा। अगर फ़िल्मों में हीरो बनना है तो क्रिकेट चैंपियन बनने की सोच को भूलना पड़ेगा। ये दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध हैं।

इसलिए किसी एक का ही संकल्प करना चाहिए। उसी के लिए प्रयास करना चाहिए। उसी को हासिल करना चाहिए। लेकिन अगर कुछ भी न करते हुए घर में बैठकर ध्यान करेंगे तो दोनों में से कुछ भी नहीं मिलेगा। क्योंकि ध्यान करने वाला बुद्ध बनता है। और वो भी तभी, जब वह ध्यान में बुद्ध की तरह विशेष प्रयास करेगा!

इसलिए जीवन में परस्पर विरुद्ध संकल्प नहीं होने चाहिए। क्योंकि अगर हमारे मन में परस्पर विरुद्ध संकल्प रहते हैं, तो हम कुछ भी नहीं कर सकते... कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। जीवन ऐसा हो जाएगा जैसे जहां पर रखा कंबल वहीं होता है! ''मेरा यह जीवन क्रिकेट चैंपियन बनने के लिए ही है'', ''मेरा यह जीवन फिल्म हीरो बनने के लिए ही है'', ''मेरा यह जीवन धन कमाने के लिए ही है'', ''मेरा यह जीवन **MLA** बनने के लिए ही है'', ''मेरा यह जीवन कलेक्टर बनने के लिए ही है'' इसके अलावा यदि

आप दो या तीन लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो सब कुछ उलझन बन कर कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे।

इसलिए यह जान लेना चाहिए कि परस्पर विरुद्ध संकल्प नहीं होने चाहिए।

संकल्प शुद्धि

हर मनुष्य को अपने लक्ष्यों को पूरा करना हो तो मुख्यत: ''एक संकल्प'' उसके साथ-साथ ''संकल्प शुद्धि'' भी आवश्यक होती है।

धान की फसल में यदि कोई खर-पतवार न हो, तो वह ''शुद्ध फसल'' कहलाती है। वैसे ही यदि संकल्पों में कोई विकल्प न हो तो उसे ''शुद्ध संकल्प'' कहा जाता है। लेकिन यदि विकल्प मौजूद हो तो संकल्प अशुद्ध हो जाता है।

ऐसे लोग भी जो चाहते हैं, उसे हासिल नहीं कर पाते। इसलिए बिना विकल्प के ''शुद्ध संकल्प'' से ही जीवन में जो चाहा है, उसे हासिल किया जा सकता है। यही सेत महाशय के द्वारा दिया गया संदेश है।

संकल्प शक्ति!

जहाँ एक संकल्प के साथ दो या तीन विकल्प जुड़ जाते हैं... वहाँ उस संकल्प में शक्ति नहीं होती। ऐसा संकल्प निष्फल हो जाता है। इसलिए यदि संकल्प में शक्ति चाहिए तो ''संकल्प शुद्धि'' होनी चाहिए। अर्थात उसमें कोई विकल्प नहीं होना चाहिए। जो प्रयास किया जाए वो एक ही तरीका का होना चाहिए।

इसलिए हर एक को इस जीवन में क्या करना चाहिए? यह तय करना चाहिए। अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री बनना चाहा, एस.पी. बालसुब्रमण्यम ने महान संगीत विद्वान बनना चाहा, तेंडुलकर ने क्रिकेट चैंपियन बनना चाहा...उन्होंने किसी एक पर ही पूरी श्रद्धा, एकाग्रता केंद्रित किया। बाकी सभी को बगल में रख दिया। जो चाहा उसे हासिल कर लिया।

क्योंकि आम के पेड़ को ही लीजिए। आम का पेड़ आम के ही

फूल देता है। आम के ही फल देता है। लेकिन वह पेड़ तरह-तरह के फूल नहीं देता, ना ही अलग-अलग तरह के फल देता है, है ना? इसलिए एक बीज, एक पेड़ ये सब एक ही प्रकार के होते हैं। उसी तरह हमारा जीवन भी एक ही मार्ग में होना चाहिए। हमें किसी एक मार्ग को चुनना चाहिए। अपने जीवन को उसी मार्ग के लिए समर्पित करना चाहिए।

चाहे सितार बजाएँ, फुटबॉल खेलें, ध्यान सिखाएँ, सारा जीवन उसी को करना चाहिए। हमें किसी एक के लिए ही समर्पित होना चाहिए।

इसलिए संकल्प शुद्धि होने पर संकल्प शक्ति आती है। संकल्प शक्ति होने पर संकल्प सिद्धि मिलती है। यानी जो संकल्प किया है वो सिद्ध होगा। यानी जो सोचा है वो हासिल करते हैं।

चाहे जो भी हो मुख्यत: यदि संकल्प शुद्धि होना हो तो, और उसके द्वारा संकल्प शक्ति बढ़ना है तो कोई भी मन की शुद्धि करना चाहिए। मन को शून्य बनाना चाहिए। उसके लिए एकमात्र मार्ग है "श्वास पर ध्यान" रखकर ध्यान करना। इसलिए ध्यान तीव्रता से कीजिए। संकल्प शक्ति को बढ़ाइए। जो सोचा है उसके लिए विशेष प्रयास कीजिए। जो चाहा है उसे हासिल कीजिए।

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) ज्ञान माला Rs.70/-
3) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................. Rs.70/-
4) अगर मानव को योगी बनना है तो ? Rs.60/-
5) महात्माओं का संदेशों............................... Rs.50/-
6) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
7) शाकाहार ही मानव का आहार है ! Rs.50/-

Tatavarthy Raghavarao Sir Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Die before death!	Rs.120
4.	The Law of Karma	Rs.100
5.	What is Meditation?	Rs.80
6.	True Path	Rs.80
7.	What comes after death ?	Rs.70
8.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
9.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
10.	What is Intention?	Rs.50
11.	Why is this life?	Rs.50
12.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
13.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
14.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1.	आत्म शास्त्र ।	Rs.200/-
2.	ध्यान विद्या ।	Rs.160/-
3.	भगवद् गीता का सार ।	Rs.160/-
4.	सत्य मार्ग ।	Rs.160/-
5.	मरने से पहले मरना है।	Rs.130/-
6.	गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?	Rs.120/-
7.	भगवान कौन है।	Rs.120/-
8.	कर्म सिद्धांत ।	Rs.120/-
9.	विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ ।	Rs.120/-
10.	ब्रह्म ज्ञान ।	Rs.100/-
11.	यह जीवन क्यों है ?	Rs.100/-
12.	मेहर बाबा का संदेश ।	Rs.100/-
13.	मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।	Rs.80/-
14.	भगवत के दृश्यों का अर्थ ।	Rs.80/-
15.	आत्म हंतक कौन होता है ।	Rs.70/-
16.	दुख निवारण का मार्ग	Rs.75/-
17.	उत्तम पुरूष	Rs.60/-
18.	आर्थिक स्थिति बढाना है तो ?	Rs.60/-
19.	निर्वाण मार्ग	Rs.60/-
20.	सत्य	Rs.50/-
21.	क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?	Rs.50/-
22.	गुरू को पहचानना कैसे ?	Rs.50/-
23.	विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या	Rs.50/-
24.	शाकाहार ही मानव का आहार है!	Rs.50/-
25.	संकल्प अर्थात ?	Rs.40/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthyvari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

''यह जो विषय है... संकल्पशक्ति... वह जीवन में अत्यंत मौलिक विषय है। मनुष्य अपनी 'संकल्पशक्ति' से ही 'सृष्टिकर्ता' के जैसे प्रतिष्ठित है। मनुष्य ही नहीं, कोई भी प्राणी अपनी 'संकल्पशक्ति' से ही 'कर्ता' के जैसे, 'सृष्टिकर्ता' के जैसे प्रतिष्ठित है।''

– ब्रह्मर्षि पत्रीजी

Rs.40/-